INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
(Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal)
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 6.865 (SJIF 2023)

बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों का अध्ययन

(Study of Educational Thoughts of Bal Gangadhar Tilak)

डॉ. सुमन श्रेष्ठ
असिस्टेंट प्रोफेसर बी.एड.
एन. के. बी. एम. जी. पी. जी. कालेज, चन्दौसी।

DOI No. 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/06.2023-83618784/IRJHIS2306010

सारांश :

शिक्षा बहुमूल्य खजाने की कुंजी के समान है, जो भौतिक एवं आध्यात्मिक उपलब्धियों को हमें प्रदान करती है। कुछ मानव ऐसे होते हैं जिनका सृजन इतिहास करता है किन्तु कुछ ऐसे भी मानव हैं जो इतिहास सृजन करते हैं। बाल गंगाधर तिलक ऐसे ही मानव की श्रेणी में आते हैं इन्होंने एक सच्चे सपूत एवं देशभक्ति की नजरों से भारत को देखा। भारत के राष्ट्रीय विचारक होने के नाते इन्होंने भारतीय समाज की व्यवस्था दृढ़ की और उनके विचारों को उभरते हुए अन्धविश्वास की गहराई में जाकर ईश्वर और भारत के भविष्य के प्रति दृढ़ आस्था के आधारों का निर्माण किया। इनकी बहुमुखी प्रतिभा ने पूरे संसार के मानवों को अपनी ओर आकर्षित किया और उनके प्रति सहज सम्मान एवं श्रद्धा की भावना जागृत की। उपनिषदों की दुहिता गीता पर लिखी उनकी टीका ''गीतारहस्य'' में उनके व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। इस अनुसंधान के उद्देश्य बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों का अध्ययन् विवेचन एवं विश्लेषण करना एवं वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बाल गंगाधर तिलक के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन करना है व अनुसंधान की विधि अनुसंधान ऐतिहासिक प्रसंगों, तथ्यों, घटनाओं तथा दृष्टान्तों पर आधारित है। अतः शोधार्थिनी ने अपनी समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया है। तिलक के जीवन दर्शन एवं चिन्तन पर उनकी पारिवारिक दशाओं के साथ–साथ उस समय की राजनीतिक तथा सामाजिक दशाओं का प्रभाव दिखाई देता है। तिलक एक महान शिक्षाशास्त्री थे, उन्होंने जिस राष्ट्रीय शिक्षा की पुरजोर वकालत की थी उसकी रूपरेखा को उन्होंने स्वयं तैयार किया था। तिलक भारत वासियों को राष्ट्रीय शिक्षा से परिचित कराना चाहते थे ताकि उनमें राष्ट्रीय–चरित्र का निर्माण हो सकें। राष्ट्रीय शिक्षा देने के लिए उन्होंने जिस पाठ्यक्रम का निर्माण किया वह व्यावहारिक और देशवासियों के लिए सहायक था। ऐसे पाठ्यक्रम में उन्होंने औद्योगिक एवं प्राविधिक शिक्षा को स्थान देने की बात कही थी। उन्होंने शिक्षा की एक ऐसी भूमिका तैयार की जो भारतीयों को आत्मनिर्भर बनायें, उनकी आर्थिक तंगी दूर करे।

मुख्यशब्द *: गीतारहस्य ,बहुमुखी प्रतिभा ,देशभक्ति, राष्ट्रीय शिक्षा ,राष्ट्रीय–चरित्र ,आत्मनिर्भर*

प्रस्तावना :

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जिसकी उत्पत्ति व विकास अनुभव में ही निहित है। शिक्षा उस विकास का नाम है, जो आदि (जन्म) से लेकर जीवन के अन्तिम क्षण तक चलती रहती है। इसी विकास के कारण व्यक्ति अपनी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त करता है, जीवन की विभिन्न समस्याओं का समाधान करता है और अपने कर्त्तव्य का पालन करता है, इसी विकास से उसका जीवन सफल होता है। देश के विकास में शिक्षा की भूमिका अति महत्त्वपूर्ण मानी जाती है। यह देश की बुनियादी व मूलभूत आवश्यकता है। शिक्षा बहुमूल्य खजाने की कुंजी के समान है, जो भौतिक एवं आध्यात्मिक उपलब्धियों को हमें प्रदान करती है। कुछ मानव ऐसे होते हैं जिनका सृजन इतिहास करता है किन्तु कुछ ऐसे भी मानव है जो इतिहास सृजन करते है। बाल गंगाधर

तिलक ऐसे ही मानव की श्रेणी में आते हैं इन्होंने एक सच्चे सपूत एवं देशभक्ति की नजरों से भारत को देखा। विश्व के मान–चित्र पर उभरते हुए भारत की पहली रूपरेखा तैयार की तथा देश के नवनिर्माण की वह नींव रखी जिस पर सपनों को हकीकत में परिवर्तित किया जा सकें।

भारत के राष्ट्रीय विचारक होने के नाते इन्होंने भारतीय समाज की व्यवस्था दृढ़ की और उनके विचारों को उभरते हुए अन्धविश्वास की गहराई में जाकर ईश्वर और भारत के भविष्य के प्रति दृढ़ आस्था के आधारों का निर्माण किया। इनकी बहुमुखी प्रतिभा ने पूरे संसार के मानवों को अपनी ओर आकर्षित किया और उनके प्रति सहज सम्मान एवं श्रद्धा की भावना जागृत की।उपनिषदों की दुहिता गीता पर लिखी उनकी टीका ''गीतारहस्य'' में उनके व्यक्तित्व के दर्शन होते हैं। उनका व्यक्तित्व आध्यात्मिक एवं व्यवहारिक रूपों का दर्पण था। राष्ट्र को अंग्रेजों से मुक्त कराना उनके जीवन का आदर्श था। तिलक भारत में उग्र राष्ट्रवाद के जन्मदाता थे। उनका राष्ट्रवाद अंशतया पुरूत्थानवादी और पुनर्निर्माणवादी था। उन्होंने वेदों तथा गीता से आध्यात्मिक शक्ति एवं राष्ट्रीय उत्साह ग्रहण करने का संदेश दिया और बतलाया कि भारत को प्राचीन परम्पराओं के आधार पर ही आज के भारत के लिए स्वस्थ राष्ट्रवाद की स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है। तिलक ने भारतीयों में यह भावना उत्पन्न करने का अथक प्रयास किया कि उन्हें गीता और वेदों के महान सन्देशों से नई शक्ति और नई चेतना ग्रहण करनी चाहिए, ऐसा करने पर ही भारत वह शक्ति प्राप्त कर सकेगा, जिसके बल पर अंग्रेजों से टक्कर लेकर स्वराज प्राप्त किया जा सकेगा। सुधारों के नाम पर प्राचीनता का अनादर करना राष्ट्रीयता के पतन का प्रतीक है। यदि भारत में सच्ची राष्ट्रीयता का प्रसार करना है तो उसके लिए आवश्यक है कि प्राचीन संस्कृति का पुनर्जागरण किया जाये।

अनुसंधान के उद्देश्य :

1. बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों का अध्ययन् विवेचन एवं विश्लेषण करना।
2. वर्तमान परिपेक्ष्य में बाल गंगाधर तिलक के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

अनुसंधान की विधि :

यह अनुसंधान ऐतिहासिक प्रसंगों, तथ्यों, घटनाओं तथा दृष्टान्तों पर आधारित है। अतः शोधार्थी से अपनी समस्या के समाधान हेतु अनुसंधान की ऐतिहासिक विधि का प्रयोग किया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और बाल गंगाधर तिलक :

महाराष्ट्र के चित्तपावन ब्राह्मण वंश का इतिहास अति गौरवशाली रहा है। शिवाजी के पश्चात् महाराष्ट्र राज्य के उत्तराधिकारी बने पेशवा इसी वंश की संतान थे। भारत के महान क्रान्तिकार वीर सावरकर, गोपालकृष्ण गोखले तथा लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक इसी वंश के थे।लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का जन्म सम्वत् 1912 में आषाढ़ मास की कृष्ण पक्ष की षष्ठी को 23 जुलाई सन् 1856 ई0 को भारतीय ब्राह्मण जाति की प्रसिद्ध महाराष्ट्र के चित्तपावन उपजाति मेंहुआ था। तिलक के प्रतिपितामह का नाम केशव राव था। तिलक के दादा का नाम रामचन्द्र पन्त था, जो केशव राव के ज्येष्ठ पुत्र थे। उनका जन्म 1802 ई0 में हुआ था। उनके पुत्र का नाम गंगाधर पन्त था, जिनका जन्म 1820 ई0 में हुआ था वे पूना (पूणे) में अंग्रजी की शिक्षा प्राप्त करने के साथ ही यह एक मराठी विद्यालय में शिक्षक हो गये। कुषाग्र बुद्धि, परिश्रम और कर्तव्य परायता के ही कारण जीवन में उनकी उन्नति हुई और वे स्कूलों के असिस्टेंट डिप्टी इन्स्पेक्टर पद पर पहुँच सके।इनका विवाह पार्वतीबाई से सम्पन्न हुआ। पार्वतीबाई एक सुशील व पतिव्रत में लीन रहने वाली उच्चकोटि की गृहणी थी।

शिक्षा आरम्भ :

तिलक को रत्नागिरि के प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश दिलाया गया था, किन्तु उनकी वास्तविक शिक्षा पूना के 'मराठी विद्यालय' से आरम्भ हुई। वहाँ उन्होंने मराठी व्याकरण, इतिहास और भूगोल की अच्छी शिक्षा पायी। गणित का ज्ञान प्राप्त कर लेने के बाद बाल का प्रवेश पूना के सिटी स्कूल में करा दिया गया। सिटी स्कूल से पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् बाल ने पूना हाईस्कूल में प्रवेश लिया। यह विद्यालय अपने अच्छे अनुशासन के लिए जाना जाता था।गंगाधर शास्त्री का जब से थाणे स्थानान्तरण हो गया

था तब से उनकी तबियत कुछ खराब रहने लगी थी। उन्होंने अपने पुत्र 'बाल' का विवाह शीघ्र करने की इच्छा जतायी। उस समय बाल की आयु केवल पन्द्रह वर्ष की थी और मैट्रिक में अध्ययन कर रहे थे। गंगाधर पंत ने 'बाल' का विवाह 'तापी' नामक एक कन्या के साथ कर दिया। विवाह के पश्चात् तापी का नाम बदलकर सत्यभामा रख दिया गया। उस समय की रीति–रिवाज के अनुसार बलवन्त विवाह समारोह में रूठे नहीं, बल्कि उन्होंने ऐसी माँग की कि, ''इधर–उधर की निरूपयोगी वस्तुऐं देने की अपेक्षा मुझे कुछ श्रेष्ठ पुस्तकों ही दी जाए।'' इस कथन से स्पष्ट होता है कि तिलक को शिक्षा में बहुत रूचि थी।

डेक्कन कॉलेज का विद्यार्थी जीवन :

पूना के डेक्कन कॉलेज में सन् 1873 ई0 में आगे के अध्ययन के लिए प्रवेश लिया। डेक्कन कॉलेज से तिलक ने गणित, धर्मशास्त्र, इतिहास और खगोल विज्ञान जैसे विषयों का गहन अध्ययन किया। खगोल विज्ञान में उनकी अत्याधिक रूचि थी। वे अपने अध्यापक केरोपन्त छत्रे के साथ रात्रि में दूरबीन से नक्षत्रों का अध्ययन करते थे। सन् 1977 ई0 में तिलक ने डेक्कन से बी0ए0 की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर ली। इसके बाद तिलक ने एल0एल0बी0 में प्रवेश लिया। और सन् 1879 में इस परीक्षा को उत्तीर्ण किया। उन्होंने अपनी कानून की पढ़ाई में हिन्दू विधिशास्त्र का गहन अध्ययन किया। अंग्रेजी साहित्य पढ़ने के साथ उन्होंने मनुस्मृति, मिताक्षरा तथा विज्ञानेश्वर का भी गम्भीरता से अध्ययन किया।

तिलक का जीवन संघर्ष :

सन् 1880 ई. में बाल गंगाधर तिलक ने अपने सार्वजनिक जीवन का प्रारम्भ किया। उन्होंने अपने सार्वजनिक जीवन का प्रथम पग शिक्षा के क्षेत्र में बढ़ाया था। क्योकि अपनी युवावस्था के उन दिनों की चर्चा करते हुए तिलक ने कहा था ''हम लोगों का हृदय उस समय देश के पतन को देखकर पीड़ित था और हम लोग बहुत सोच–विचार कर इसी निष्कर्ष पर पहुँचे थे कि मातृभूमि का उद्धार केवल शिक्षा से ही सम्भव है।'' देशभक्ति से अति–प्रति तिलक का हृदय अंग्रेजी हुकूमत की नौकरी करने को तैयार नहीं हुआ। जब विष्णु शास्त्री चिपलूणकर ने एक राष्ट्रीय स्कूल खोलने का प्रस्ताव रखा तो वह एकदम तैयार हो गये। और जनवरी 1, 1880 को पूना में 'न्यू इंग्लिश स्कूल' की स्थापना हुई। एम0बी0 जोशी, बी0एस0 आप्टे और एम0ए0 आगरकर बाद में इसके प्रबन्धकीय गुट में शामिल हुऐ। एक प्रभावी शैक्षणिक व्यवस्था लाने के उद्देश्य से यह स्कूल जल्दी ही पूना में एक सर्वाधिक लोकप्रिय स्कूल बन गया। देश को पुनर्जीवित करने का समाचार पत्रों से अधिक उत्तम साधन दूसरा नहीं हो सकता। उन्होंने दो साप्ताहिक समाचार–पत्र निकालने की सोची जो कि मूल्य में बहुत सस्ते हों। इस प्रकार रविवार, जनवरी 2, 1881 को मराठा (MAHARATTA) और मंगलवार को केसरी के प्रथम संस्करण प्रकाशित हुये। इन पत्रों के द्वारा जन–जागरण और देशी–रियासतों का पक्ष भी प्रस्तुत किया जाता था। तिलक ने अपने समाचार पत्रों के माध्यम से नमक का विरोध, शराबबन्दी, क्राफोर्ड भ्रष्टाचार काण्ड का पर्दाफाश करने का कार्य किया। जिससे उन्हें अंग्रेजों का कोप भाजन बनना पड़ा। वह कई बार जेल भी गये। इन दोनों पत्रिकाओं की शैली बड़ी तीखी और प्रभावपूर्ण थी। अक्टूबर 24, 1884 में डेक्कन ऐजुकेशन सोसाइटी की स्थापना की गयी। जिसमें तिलक के साथ–साथ रानाडे, भण्डारकर तथा अन्य गणमान्य लोग शामिल हुए। 1885 में इस सोसाइटी ने फर्ग्युसन कॉलेज को शुरू किया।

गणपति और शिवाजी उत्सव :

जन–सामान्य में सामाजिक और राजनीतिक चेतना जागृत करने के लिए तिलक ने महाराष्ट्र में गणेश (गणपति) तथा शिवाजी उत्सवों का आयोजन प्रारम्भ किया। इन उत्सवों का मुख्य उद्देश्य, हिन्दुओं में निर्भयता और संघर्ष शक्ति की भावनाओं का भरना था। सन् 1893 ई0 के दंगे के कारण तिलक को सूझ जाग पड़ी और उन्होंने गणपति–पूजा को हिन्दू संगठन तथा राष्ट्रीय चेतना का आधार बना लिया। उनका ध्येय ब्रिटिश राज के विरूद्ध जनता को भड़काना था। अगले दो वर्षों में गणपति उत्सव की लोकप्रियता इतनी बढ़ गयी कि बहुत से नगरों में हिन्दुओं के साथ मुसलमानों ने भी उसमें भाग लिय तिलक ने इन उत्सवों के द्वारा जन–जागृति लाने के लिए इन्हें सार्वजनिक रूप में मनाने का आह्वान किया।

माण्डले जेल एवं उसके बाद :

उन्होंने 1908 में ही सरकार की आबकारी नीति के विरूद्ध शराब की दुकानों पर धरना देने का भी आन्दोलन चलाया। धरने के विरूद्ध राजकीय अभियान में उन्हें 24 जून, 1908 को बम्बई में गिरफ्तार कर लिया गया भारत से 14 सितम्बर 1908 को तिलक को ''हाडिंज'' नामक जहाज से मांडले जेल के लिए रवाना हुये। मांडले जेल में ही तिलक ने मराठी भाषा में गीता पर टीका लिखी जो 'गीता–रहस्य' के नाम से प्रसिद्व हुई। इसको लिखने में उन्होंने मात्र पाँच महीने लिये, लेकिन गीता–रहस्य 1915 में प्रकाशित हो पायी थी। यह बड़ी अनूठी एवं लोकप्रिय पुस्तक सिद्ध हुई और एक सप्ताह के अन्दर ही इसके प्रथम संस्करण की छः हजार प्रतियां हाथों–हाथ बिक गई। मांडले जेल में 6 वर्ष काटकर तिलक महाराज 16 जून 1914 ई. को फिर पूना आ पहुँचें। वापस आने पर जनता ने उनका उत्साहपूर्वक अभिनन्दन किया और लोगों को वचन दिया कि वे पहले की भाँति अपने लक्ष्य को पाने के लिए प्रयत्नशील रहेंगे। उन्होंने एनी बेसेन्ट के साथ मिलकर होमरूल लीग की स्थापना की। उन्होंने होमरूल आन्दोलन चलाया, जिससे देश में क्रान्ति की एक लहर देखने को मिलती है।

तिलक का निधन :

तिलक अब वृद्धावस्था की सीमा पर थे, उनका शरीर आराम चाहता था। उन्होंने गाँधी जी से लम्बी बातचीत की और राष्ट्र संघर्ष का पूरा दायित्व गाँधी जी को सौंप दिया। गाँधी जी ने ही तिलक को ''लोकमान्य'' कहकर सम्बोधित किया था। समय की गति परिवर्तित हुई, तिलक ज्वर से पीड़ित हो गये। दो दिन बाद उनका जन्मदिन था। बीमारी की हालत में ही तिलक का 64वाँ जन्मदिन मनाया गया। साथियों ने उन्हें जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाऐं दी। तिलक की स्थिति दिन–प्रतिदिन बिगड़ती चली जा रहीं थी। मूक बना काल–चक्र सब कुछ देखता रहा। तिलक ने एक लम्बी सांस ली और अपने मन में कुछ कहने लगे तभी उन्हें हृदय शूल का आक्रमण हुआ और इस भीषण संघर्ष का सामना करते हुए अंततः 12 बजकर 50 मिनट पर भारत का यह वीर सपूत 1 अगस्त 1920 को सारे बन्धन तोड़ गया। स्वतंत्रता की राह दिखाने वाली यह क्रान्तिमय ज्योति सदा–सर्वदा के लिए परमज्योति में विलीन हो गई। उनके अन्तिम शब्द थे ''यदि स्वराज्य न मिला तो भारत समृद्ध नहीं हो सकता। स्वराज्य हमारे अस्तित्व के लिए अनिवार्य है।'' इसके बाद वे फिर नहीं बोले।

लोकमान्य तिलक के असामयिक निधन पर 'इंडियन सोशल रिफॉर्मर' ने लिखा– ''बम्बई में सबसे बड़ा जुलूस दादा भाई नैरोजी के निधन पर देखा था पर इस जुलूस के आगे वह कुछ नहीं था। दादा भाई के शव के साथ जाने वालों के अधिकाशतः अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोग थे पर इस जुलूस में पढ़े लिखे ही नहीं हर क्षेत्र और हर वर्ग के लोग थे'' नेहरू जी के शब्दों में जो उस समय में बम्बई में मौजूद थे ''बम्बई की पूरी दस लाख जनता अपने उस महान नेता को अन्तिम श्रद्धांजलि देने के लिए सड़को पर निकल आई, जिसे वह बहुत ज्यादा प्यार करती थी।''

बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचार :

बाल गंगाधर तिलक और आगरकर ने एक साथ देश सेवा के लिए शिक्षा के प्रचार–प्रसार का संकल्प लिया था। बाल गंगाधर तिलक और आगरकर महाराष्ट्र में शिक्षा आंदोलन के जन्म–दाता थे। उदारवादी, भारत में प्रचलित पाश्चात्य शिक्षा व्यवस्था के लिए अंग्रेजों के प्रति कृतज्ञता अनुभव करते थे, लेकिन तिलक इस दृष्टिकोण से असहमत थे। उनका मानना यह था कि यह शिक्षा व्यवस्था न तो छात्रों को देश की सही स्थिति का ज्ञान कराती है और न ही उन्हें जीविका के लिए तैयार करती है तिलक वास्तविक शिक्षा उसी को मानते थे जो व्यक्ति को जीविकोपार्जन के योग्य बनायें, उसमें देश के सच्चे नागरिक गुणों का संचार करें और जो पूर्वजों के ज्ञान और अनुभव दें। राष्ट्रीय शिक्षा पर भाषण (1908) के दौरान तिलक के शिक्षा पर विचार–शिक्षा वह है, जो हमें अपने पूर्वजों के अनुभवों का ज्ञान देती है। यह पुस्तकों के माध्यम से या अन्य किसी माध्यम से दी जा सकती है। प्रत्येक व्यवसाय के लिए शिक्षा की आवश्यकता होती है और प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह इसे अपने बच्चों को दें। वास्तव में ऐसा कोई व्यवसाय नहीं है, जिसके लिए शिक्षा की आवश्यकता न हो।हम सब ऐसी शिक्षा की आवश्यकता अनुभव करते है, जो हमें अच्छा नागरिक बनाऐगी।

शिक्षा–दर्शन के आधारभूत तत्व :

शिक्षा–दर्शन के आधारभूत तत्व निम्नलिखित हैं:–

1 शिक्षा को बालक और बालिकाओं के आंतरिक गुणों का विकास करना चाहिए।

2 शिक्षा को बालक की त्रिशक्तियाँ, मानसिक, शारीरिक तथा आध्यात्मिक विकास करना चाहिए।

3 शिक्षा को बालकों की बेरोजगारी से एक सुरक्षा देनी चाहिए।

4 शिक्षा प्रत्येक वर्ग को मिलनी चाहिए।

5 शिक्षा द्वारा व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना चाहिए।

6 बालक को स्वयं का ज्ञान सक्रिय रूप से प्राप्त करना चाहिए।

7 शिक्षा का माध्यम मातृ–भाषा होनी चाहिए और अन्य भाषाओं में इसका स्थान उच्च होना चाहिए।

8 शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक को जीविकोपार्जन के योग्य बनाएँ अर्थात शिक्षा व्यवसायपरक होनी चाहिए।

9 शिक्षा में धर्म को स्थान देना चाहिए क्योंकि धर्म के द्वारा व्यक्तियों में निकटता आती है।

10 शिक्षा को बालक की नैतिकता का विकास करना चाहिए और उनके व्यावहारिक जीवन को सफल बनाना चाहिए।

11 शिक्षा को बालक का मित्र और पथप्रदर्शक होना चाहिए।

शिक्षा का उद्देश्य :

बाल गंगाधर तिलक के शिक्षा के उद्देश्यों की व्याख्या दो भागों में बाँटकर की जा सकती है।

1 प्राथमिक उद्देश्य

2 द्वतीयक उद्देश्य

प्राथमिक उद्देश्य

शिक्षा के प्राथमिक उद्देश्य निम्नलिखित हैं:–

1 बालक को बड़े होने पर जीविकोपार्जन के योग्य बनाना।

2 बालक को अपने आचरण में अपनी संस्कृति को व्यक्त करने का प्रशिक्षण देना।

3 बालक की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास करके उसके व्यक्तित्व का सामंजस्यपूर्ण विकास करना।

4 बालक की पवित्रता प्रदान कर उसका चरित्र निर्माण करना।

5 देश की स्वतंत्रता के लिए बालक को राजनीतिक शिक्षा देना।

6 बालक की चित्त सम्बन्धी क्रियाओं का उन्नत करके उनके अन्तःकरण का विकास करना।

द्वतीयक उद्देश्य :

शिक्षा के द्वितीयक उद्देश्य निम्नलिखित हैं:–

1 चरित्र निर्माण कर बालक को देश का सच्चा नागरिक बनाना।

2 पारस्परिक झगड़ों, ईर्ष्या, प्रेम आदि को दूर करना।

3 देश की जनता को सुसुप्तावस्था से जागृतावस्था में ले जाना।

4 व्यक्ति को सभी प्रकार की दासता से मुक्त करके उसकी आत्मा को उच्चतर जीवन की ओर ले जाना।

पाठ्यक्रम :

बाल गंगाधर तिलक ने राष्ट्रीय शिक्षा के महत्त्व को समझते हुए इसकी पुरजोर वकालत की। राष्ट्रीय शिक्षा की रूपरेखा को तैयार करने में तिलक का योगदान महत्त्वपूर्ण था लेकिन इस काम में उन्हें आगरकर तथा चिपलूणकर ने भी सहायता की थी। तिलक का कहना था कि राष्ट्रीय शिक्षा से ही राष्ट्रीय चरित्र का निर्माण हो सकेगा, देशवासी मत–मतान्तरों से ऊपर उठकर संगठित हो सकेंगे और देश की शक्ति में वृद्धि होगी। तिलक ने राष्ट्रीय शिक्षा का एक ऐसा पाठ्यक्रम में प्रस्तुत किया जो

व्यावहारिक था और देशवासियों के सर्वागीण विकास में सहायक था। उन्होंने बारम्बार इस बात का आग्रह किया कि शिक्षा पाठ्यक्रम में औद्योगिक एवं प्राविधिक शिक्षा को स्थान दिया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय शिक्षा पर भाषण (1908) में तिलक ने कहा था ''कि औद्योगिक शिक्षा देना हमारी शिक्षा नीति का तीसरा घटक होगा। किसी भी स्कूल में यह शिक्षा नहीं दी जाती। यह शिक्षा इन स्कूलों (राष्ट्रीय स्कूलों) में दी जायेगी। यह महत्त्वपूर्ण बात है, इस पूरी शताब्दी में हम यह नहीं सीख सके कि एक दियासलाई कैसे बनाई जाती है। तिलक की मंशा थी कि भारत में भी स्वतंत्र देशों जैसी शिक्षण प्रणाली लागू हो। यदि ऐसा हो तो भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव हिल जायेगी। इस कार्य हेतु कुछ शिक्षण संस्थाएँ तैयार थी किन्तु उन्हें यह भय था कि ऐसा करने से कहीं उनकी सरकारी सहायता न बन्दी हो जाए।

तिलक ने मातृभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता पर बल दिया। वे कहते थे कि, ''आज जो व्यक्ति अंग्रेजी बोल लेता है अथवा लिख लेता है, उसे शिक्षित कहा जाता है। परन्तु केवल भाषा–ज्ञान ही सच्ची शिक्षा नहीं है। भारत के अतिरिक्त और किसी देश में विदेशी भाषाओं का अध्ययन करना अनिवार्य नहीं है। हम विदेशी भाषा के माध्यम से शिक्षा पाने में बीस–पच्चीस वर्ष लगाते है, इसे हम सात–आठ वर्षो में ही ग्रहण कर सकते है, यदि इसे भारतीय भाषाओं के माध्यम से लिया जाए।'' अंग्रेजी तो हमें सीखनी ही है, पर उसकी शिक्षा अनिवार्य किये जाने का कोई कारण दिखाई नहीं देता है। अंग्रेज राज्य की तुलना मुस्लिम राज्य से करते हुए उनका कहना था कि मुस्लिम राज में भी हमें फारसी सीखनी थी किन्तु उसके लिए कोई बाध्यता नहीं थी।राष्ट्रीय शिक्षा के पक्षपोषक होते हुए भी तिलक अंग्रेजी के महत्त्व को अस्वीकार नहीं करते थे। उनका मानना था कि मातृभाषा को प्रधानता तथा अंग्रेजी को गौण स्थान दिया जाना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में एक यथार्थवादी विचारक थे।

राजनीतिक शिक्षा :

तिलक के अनुसार शिक्षा युवकों को देश की सेवा और स्वाधीनता के लिए समर्पित करने का माध्यम थी। अतः उनके अनुसार राजनीतिक शिक्षा, शिक्षा के पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य अंग थी। वे राजनीतिक शिक्षा के माध्यम से युवकों को देश की परिस्थितियों से परिचित कराकर उसमें स्वाधीनता प्राप्ति का संकल्प जगाना चाहते थे।

शिक्षण विधि :

तिलक पर किये गये अध्ययन से यह ज्ञात होता है, कि उन्होंने अपनी शिक्षण विधि में सहयोगात्मक क्रिया, नियोजन की भावना, यथार्थता, पहल करने का जुनून और सामूहिक उत्तर–दायित्व पर बल दिया है। उनके अनुसार बालक को प्राथमिक ज्ञान प्रदान करने के लिए लिपि का ज्ञान प्रदान करना चाहिए। लिपि का ज्ञान प्राप्त कर ही छात्र दूसरों के विचारों को आत्मसात कर सकता है। वह यह भी मानते है, कि छात्र को करके सीखना चाहिए, जिससे उसे कार्य का अनुभव हो जाए और भविष्य में उसे अपने जीवन में प्रयोग कर सकें। तिलक का मानना था कि अनुभव छात्र की पूँजी है, जो उसके जीवन को सफल बनाने में उसका सहयोग करती है। सीखे गए विषयो के सार तत्वों का समन्वय कर ही वास्तविक ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। समन्वय के द्वारा व्यक्ति में नवीन ज्ञान का विकास होता है और वह इस ज्ञान का उपयोग राष्ट्रीय आन्दोलन के लोगों के चेतना को जगाने के लिए कर सकता है। तिलक की यह विचारधारा उनके अन्तिम समय तक बनी रही।

शिक्षक का स्थान :

तिलक की शिक्षा बाल केन्द्रित थी, उनके अनुसार शिक्षा में बालक का महत्वपूर्ण स्थान है। उनके अनुसार–शिक्षक को छात्र का मार्गदर्शक, परामर्शदाता और मित्र होना चाहिए। शिक्षक को बालक की चिन्ताओं से मुक्त होने का परामर्श देना चाहिए। उसे बालक की समस्याओं को सुलझाने में पथ–प्रदर्शक का कार्य करना चाहिए। चूँकि तिलक शिक्षा को जन–जागरण का सर्वोत्तम् साधन मानते थे अतः राष्ट्रीय शिक्षा के शिक्षकों के लिए उनका संदेश था कि वे शिक्षा के माध्यम से भारत के प्राचीन आदर्शों को पुनर्जीवित करें तथा उपनिषदकालीन गुरूओं की प्रतिभा और समर्पण को अपना आदर्श मानकर चलें।

विद्यालय :

तिलक ने जिस राष्ट्रीय शिक्षा की कल्पना की थी उसे विद्यालयों के माध्यम से ही पूरा किया जा सकता था। वह ऐसे

विद्यालय स्थापित करने के पक्ष में थे, जो देश की परिस्थिति के अनुकूल शिक्षा दें, जिससे विद्यार्थियों को उनकी संस्कृति का ज्ञान हो और संस्कृति का यह ज्ञान विद्यार्थियों को तभी हो सकेगा, जब विद्यालय का वातावरण उपयुक्त एवं सरल होगा। विद्यालय के वातावरण के साथ शिक्षकों को भी सरल होना आवश्यक

अनुशासन :

विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने के लिए अनुशासन की महत्त्वी आवश्यकता होती है, इसलिए अनुशासन के प्रति अधिकारियों, शिक्षकों और छात्रों के दृष्टिकोण का काफी महत्त्व होता है। तिलक के अनुशासन में प्रयोजनवादी विचारधारा के गुण दिखाई पड़ते है। उनका मानना था कि–अनुशासन के नाम पर छात्र के साथ कठोरता को न प्रदर्शित किया जाए बल्कि छात्रों की प्रत्येक जिज्ञासा को शान्त करने का प्रयास किया जाना चाहिए। प्रत्येक अध्यापक का यह दायित्व है कि वह अपने कर्तव्यों का निर्वाह करें। छात्रों को पुत्रवत् स्नेह दें तथा उनके मतों का सम्मान करें।

स्त्री शिक्षा :

आधुनिक युग में नारियों को आत्मा रक्षा के उपायों का भी प्रशिक्षण देना चाहिए। स्त्रियों को चाहिए कि वह अपने मस्तिष्क में झाँसी की रानी, अहिल्याबाई आदि नारियों को स्थान प्रदान कर उनके समान बनने का प्रयत्न करना चाहिए। स्त्रियों को शिक्षा कार्यो को भी अपने हाथ में लेना चाहिए, ताकि वे आत्मनिर्भर बन सकें और राष्ट्र की उन्नति में सहायक हो। स्त्री शिक्षा की पुरजोर वकालत करते हुए, उन्होंने यह स्वीकार किया कि नारी शिक्षा के बिना राष्ट्र की उन्नति तथा उचित दिशा में प्रगति एकांगी होगी। अतः नारी शिक्षा के विकास का अपरिहार्य अंग है।बाल गंगाधर तिलक स्त्री शिक्षा के समर्थक थे। उनकी मान्यता थी कि प्रत्येक भारतीय को अपने सम्पूर्ण ज्ञान को स्त्री व पुरूष में समान रूप से वितरित करना चाहिए। स्त्री शिक्षा से ही समाज की उन्नति संभव है। 1 जून, 1916 को नागर में भाषण के दौरान तिलक ने कहा था ''इस समय हमारे देश के लोग वीरता, साहस और ज्ञान से युक्त नहीं है, जब हमारे देश की महिलायें शिक्षित होगी तो उनकी संतान वीर, साहसी और ज्ञानवान होगी।'' नारी शिक्षा के विषय में तिलक के विचार बहुत उच्च थे। उनका कहना था कि ''इस शिक्षा को सुधारकर इस योग्य बनाना चाहिए कि वह समाज–हित कर सकें।

बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता :

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के शैक्षिक विचारों के आधार पर यह कहना अनुपयुक्त न होगा कि वह भारत में राष्ट्रीय शिक्षा के जन्मदाता थे। जिस राष्ट्रीय शिक्षा को बंगाल के राष्ट्रीयतावादियों ने अपने कार्यक्रम का एक अंग माना, उसकी रूपरेखा तिलक के मन में बहुत पहले बन चुकी थी। तिलक तत्कालीन शिक्षा से आहत थे अतः वे चाहते थे कि भारत के लोगों को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जो कि उन्हें भारतीय होने का एहसास करायें। एक ऐसी शिक्षा जिसका कि उद्देश्य सिर्फ जानकारियाँ देना ही न हो बल्कि जीवन निर्वाह का मार्ग प्रशस्त करता भी हो। उन्होंने उस समय की शिक्षा पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा था कि, ''दूसरे देशों में उद्योग व प्राविधिक शिक्षा, पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण अंग होती है, पर भारतीय शिक्षण संस्थाएँ केवल घटिया अफसर पैदा करने के लिए बनी है।''

बाल गंगाधर तिलक ने शिक्षा को जीविकोपार्जन का साधन माना है उनके अनुसार वास्तविक शिक्षा वही है, ''जो व्यक्ति को जीविकोपार्जन के योग्य बनाए, उसमें देश के सच्चे नागरिक गुणों का संचार करें और जो पूर्वजों का ज्ञान और अनुभव दें।'' तिलक द्वारा दिये गये शिक्षा के इस अर्थ को अपनाकर हम शिक्षा को मूल्यवान बना सकते है आज के भौतिकवादी युग में व्यक्ति को जिस वस्तु की अति आवश्यकता है वह है जीवन–निर्वाह का साधन। शिक्षा में जीविकोपार्जन के साथ–साथ व्यक्ति को उसके अतीत का ज्ञान भी आवश्यक है, क्योंकि अपने अतीत के ज्ञान से ही व्यक्ति को अपनी संस्कृति एवं मूल्यों का ज्ञान होता है।

शिक्षा के उद्देश्यों के रूप में बाल गंगाधर तिलक ने जो उद्देश्य निर्धारित किये उसमें देशभक्ति राष्ट्रभक्ति तथा छात्र–छात्राओं के सांस्कृतिक विकास की महक आती है। उनके अनुसार शिक्षा के उद्देश्यों में, बालक को संस्कृति ज्ञान के लिए प्रशिक्षित करना, बालक का शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास करना, बालक के अन्तःकरण का विकास करना, बालक का चरित्र निर्माण कर देश का सच्चा नागरिक बनाना तथा सभी प्रकार की दास्सा से मुक्त कर व्यक्ति की आत्मा को उच्चतर जीवन

की ओर ले जाना प्रमुख है। आज की शिक्षा के द्वारा बालकों में जिस प्रकार से नैतिक हनन हो रहा है, उसे उपर्युक्त उद्देश्यों को शिक्षा पर लागू कर संभवतः दूर किया जा सकता है। हमें बालक को प्राथमिक स्तर से नैतिक बनाने का प्रयास करना चाहिए। आज की षिक्षा जो विद्यार्थियों को केवल अंकपत्र बाँट रही है। तथा अपने उद्देश्यों से भटकती दिखाई दे रही है। उसे तिलक द्वारा दिये गये शैक्षिक उद्देश्यों की ही आवश्यकता है, क्योंकि इसी प्रकार के उद्देश्य हमें सच्चा नागरिक बना सकते है और अनेकों प्रकार की दासताओं से मुक्ति प्रदान कर सकते है।

बाल गंगाधर तिलक द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा के लिए दिये गये पाठ्यक्रम के अवलोकन से ज्ञात होता है। कि उनका पाठ्यक्रम व्यवहारिक था। उन्होंने पाठ्यक्रम में औद्योगिक एवं प्राविधिक शिक्षा के साथ–साथ धार्मिक शिक्षा का भी समर्थन किया है। 1908 में राष्ट्रीय शिक्षा पर भाषण के दौरान तिलक ने कहा था कि, ''चरित्र का निर्माण करने के लिए केवल धर्मनिरपेक्ष शिक्षा पर्याप्त नहीं है। धार्मिक शिक्षा आवश्यक है क्योंकि उच्च धार्मिक सिद्धान्तों का अध्ययन हमें बुरे, कार्यो से दूर रखता है। धर्म से सर्वशक्तिमान परमात्मा के स्वरूप का बोध होता है। हमारा धर्म कहता है कि मनुष्य अपने कर्म की श्रेष्ठता के आधार पर देवता बन सकता है।'' इसके अतिरिक्त तिलक चाहते थे कि शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से ही प्रदान की जाए। उन्होंने यद्यपि अंग्रेजी भाषा का भी समर्थन किया है किन्तु उसका सीमांकन भी किया है। आज अंग्रेजी के द्वारा बच्चों को दी जा रही शिक्षा के दुष्प्रभाव को हम देख ही रहें है। अंग्रेजी की शिक्षा से व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता है और जो शिक्षा हम अपने बच्चों को कम समय में दे सकते है वहीं शिक्षा अंग्रेजी भाषा में देने पर काफी समय लग जाता है जिससे समय की अत्याधिक हानि होती है। यदि आज की शिक्षा में पाठ्मक्रम में औद्योगिक एवं प्राविधिक शिक्षा को अपनाया जाए तो यह शिक्षा व्यक्ति के जीविकोपार्जन का साधन बन सकती है तथा इस शिक्षा के माध्यम से औद्योगिक एवं व्यावसायिक प्रतिष्ठानों की उन्नति होगी और इन प्रतिष्ठानों के लिए एक कुशल, सुयोग्य, सुपगशिक्षित व्यक्ति मिल सकेंगे। आज हम तो विभिन्न धर्मावलाम्बियों के मध्य झगड़े और व्यक्तियों में पारस्परिक कलह को देख रहे है। उसे धर्मो के व्यक्तियों की धार्मिक शिक्षा को देकर दूर किया जा सकता है क्योंकि धर्म चाहे जिस समुदाय या जाति का हो वह एक दूसरे को जोड़ता है, तोड़ता नहीं।

बाल गंगाधर तिलक ने शिक्षा प्रदान करने का माध्यम मातृभाषा को स्वीकार किया है उनके अनुसार राष्ट्रभाषा द्वारा प्राप्त शिक्षा ही व्यक्ति के उत्थान में सहायक हो सकती है। तिलक का हिन्दी के प्रति प्रेम इस बात का प्रतीक है कि वो राष्ट्रभाषा के माध्यम से सम्पूर्ण भारतवासियों को जोड़ना चाहते थे। तिलक तत्कालीन परिस्थितियों से पूर्णतः अवगत थे और संभवतः वह यह भी जानते थे कि किसी राष्ट्र के उद्य और विकास का कारण उसकी अपनी संस्कृति और भाषा ही होती है। आज शिक्षा में तिलक के इन विचारों की नितान्त आवश्यकता है क्योंकि आज मनुष्य पाश्चात्य आकर्षण की ओर भाग रहा है जिससे निरन्तर वह अपनी संस्कृति से दूर होता जा रहा है। शिक्षा के द्वारा बालकों को यदि उनकी संस्कृति एवं मूल्यों का ज्ञान कराया जाए तो देश अपने पुर्नस्थान पर आ सकता है। इसके लिए सांस्कृतिक मण्डलों की स्थापना की जा सकती है। बाल गंगाधर तिलक द्वारा तत्कालीन परिस्थितियों में उचित मानी गई सैनिक एवं राजनितिक शिक्षा में वर्तमान परिस्थितियों में भी आवश्यकता है। आज के संघर्षपूर्ण युग में राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है कि विद्यालय के सभी छात्रों को सैनिक शिक्षा प्रदान की जाए ताकि छात्र संकटकालीन परिस्थितियों में अपने देश की रक्षा कर सकें। तिलक के शैक्षिक विचारों में हमें जिन शिक्षण विधियों का उल्लेख मिलता है, उनमें सहयोगात्मक क्रिया, नियोजन की भावना और सामूहिक उत्तरदायित्व विधियाँ प्रमुख है। इसके अतिरिक्त बालकों में करके सीखने की प्रवृत्ति तथा विषयों द्वारा प्राप्त ज्ञान सार तत्वों का समन्वय कर वास्तविक ज्ञान को प्राप्त करना भी तिलक के विचारों में है। इन शिक्षण विधियों की वर्तमान में आवश्यकता महसूस हो रही है, यदि आज हम बालकों को करके सीखने की प्रेरणा दे तो वह विषय के मौलिक ज्ञान को प्राप्त कर सकते है। विभिन्न विषयों के सार तत्वों का समन्वय कर कई विषयों का ज्ञान हम छात्रों को एक साथ दे सकते है, जिससे समय की उपयोगिता संदर्भित होगी तथा बचा हुआ समय किसी और कार्य में लगाया जा सकता है।

शिक्षक, जो कि छात्र का पथ–प्रदर्शक माना जाता है का स्थान भी तिलक के विचारों में उल्लिखित हुआ है। तिलक ने छात्र को प्राथमिक तथा शिक्षक को द्वितीयक स्थान प्रदान किया है। उन्होंने शिक्षक को छात्र का मार्गदर्शक एवं परामर्शदाता माना है। आज के समय में जब शिक्षक और शिक्षार्थी के सम्बन्ध बिगड़ते जा रहे है तो हमें तिलक के इन्हीं विचारों की आवश्यकता है। आज शिक्षक को छात्र के परामर्शदाता एवं मित्र के रूप में कार्य करना चाहिए क्योंकि ऐसा करके शिक्षक उनकी जिज्ञासा को शान्त करने में सक्षम हो सकता है।

अनुशासन किसी भी कार्य को सफल बनाने में आवश्यक है। अनुशासन रूपी इस तत्व को तिलक ने भी अपने शैक्षिक विचारों में स्थान दिया। उनका मानना था कि अनुशासन के नाम पर छात्र के साथ कठोरता को न प्रदर्शित किया जाए बल्कि छात्रों की प्रत्येक जिज्ञासा को शान्त करने का प्रयास किया जाना चाहिए। आज हमारे विद्यालयों में अनुशासन की कमी होती जा रही है। छात्रों पर शिक्षकों का नियंत्रण अस्थिर होता जा रहा है। विद्यालयों में दिनोदिन अनुशासन की महत्त्वता घटती जा रही है। छात्रों का ध्यान पढ़ाई में न होकर समाज विरोधी कार्यों की ओर अधिक आकर्षित होता जा रहा है। अनुशासन को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए आज तिलक के विचारों की ही आवश्यकता है। प्रत्येक विद्यालय में ऐसे शिक्षकों की नियुक्ति की जाए जो छात्रों के विचारों को समझे और उनके प्रश्नों का निराकरण या उनकी जिज्ञासा को उचित रीति से शान्त करने का प्रयास करें। शिक्षकों की नियुक्ति के साथ–साथ विद्यालयों में छात्रों के चरित्र–निर्माण के लिए उनकों धार्मिक शिक्षा भी प्रदान की जानी चाहिए। धार्मिक शिक्षा के द्वारा छात्र अनुशासन की महत्त्वता को समझेंगे और अनुशासन का पालन करेंगे। बाल गंगाधर तिलक द्वारा मुखरित उनके शिक्षा दर्शन में यह भी कहा गया है कि प्राथमिक स्तर पर शिक्षा निःशुल्क एवं अनिवार्य होनी चाहिए। वह विद्यालयों में सह शिक्षा के साथ–साथ स्त्री शिक्षा के भी प्रबल समर्थक थे। उनका मानना था कि प्रत्येक भारतीय को अपने सम्पूर्ण ज्ञान को स्त्री व पुरूष में समान रूप में वितरित करना चाहिए। स्त्री शिक्षा से ही समाज की उन्नति सम्भव है। तिलक के उपर्युक्त विचारों की प्रासंगिकता वर्तमान काल में भी अपने राष्ट्र को मजबूत आधार देने के लिए प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क व अनिवार्य बनाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए। यद्यपि इस क्षेत्र में सरकार ने अपने प्रयत्नों को सफलीभूत करते हुए 6–14 वर्ष के बच्चों की शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा दे दिया है किन्तु समस्य अभी भी इसके वास्तविक क्रियान्वयन की है। यदि इसका क्रियान्वयन उचित रूप से किया गया तो हम अपनी शिक्षा के द्वारा देश की नींव को मजबूती प्रदान करने में सफल हो सकते हैं।

निष्कर्ष :

बाल गंगाधर तिलक उस युग के महान विचारक, राजनीतिज्ञ एवं शिक्षा–शास्त्री थे, जिन्होंने चार दशकों तक देश की निरन्तर सेवा की। बाल गंगाधर तिलक सनातन धर्म को मानते थे और इसमें विश्वास करते थे किन्तु वे अन्य धर्म मतावलम्बियों से घृणा नहीं करते थे। तिलक के जीवन दर्शन एवं चिन्तन पर उनकी पारिवारिक दशाओं के साथ–साथ उस समय की राजनीतिक तथा सामाजिक दशाओं का प्रभाव दिखाई देता है। तिलक सनातनी हिन्दू थे, जिन्हें अपने धर्म पर बड़ा गर्व था। 3 जनवरी, 1906 को बनारस में धर्म के सम्बन्ध में कहा था कि ''यह धर्म (हिन्दू–धर्म) सत्य पर अवलंबित है और सत्य कभी नहीं मरता। मैं ऐसा ही कहूँगा और अपने कथन की सत्यता प्रमाणित करने के लिए तैयार भी हूँ। मेरी धारणा है कि सत्य किसी एक व्यक्ति की बपौती नहीं है, यह सार्वभौमिक और सर्वव्यापी है। यह किसी विशेष वर्ग या जाति तक सीमित नहीं है। हिन्दू–धर्म सभी धर्मों के प्रति सहिष्णु है। हमारा धर्म कहता है कि सभी धर्म सत्य पर आधारित है, मैं अपने धर्म का पालन करता हूँ, तुम अपने धर्म का पालन करो।''

वस्तुतः व्यक्ति के जीवन–दर्शन में उसके शैक्षिक–दर्शन परिलक्षित होते है। तिलक एक महान शिक्षाशास्त्री थे, उन्होंने जिस राष्ट्रीय शिक्षा की पुरजोर वकालत की थी उसकी रूपरेखा को उन्होंने स्वयं तैयार किया था। अपने इसी स्वप्न को हकीकत का रूप देने के लिए उन्होंने 'न्यू इंग्लिश स्कूल' एवं फर्ग्युसन कॉलेज की स्थापना की। उन्होंने महाराष्ट्र में 'दक्षिण शिक्षा समाज' का निर्माण भी किया था। तिलक भारत वासियों को राष्ट्रीय शिक्षा से परिचित कराना चाहते थे ताकि उनमें राष्ट्रीय–चरित्र का निर्माण हो सकें। राष्ट्रीय शिक्षा देने के लिए उन्होंने जिस पाठ्यक्रम का निर्माण किया वह व्यवहारिक और देशवासियों के लिए सहायक था। ऐसे पाठ्यक्रम में उन्होंने औद्योगिक एवं प्राविधिक शिक्षा को स्थान देने की बात कही थी। राष्ट्रीय शिक्षा पर भाषण के समय तिलक ने कहा था कि, ''औद्योगिक शिक्षा देना हमारी शिक्षा नीति का तीसरा घटक होगा। किसी भी स्कूल में यह शिक्षा नहीं दी जाती। यह शिक्षा इन स्कूलों (राष्ट्रीय स्कूलों) में दी जायेगी। यह महत्त्वपूर्ण बात है। इस पूरी शताब्दी में हम यह नहीं सीख सके कि एक दियासलाई कैसे बनाई जाती है।''

बाल गंगाधर तिलक राष्ट्रीय शिक्षा के द्वारा भारत को पाश्चात्य राष्ट्रों की पंक्ति मे खड़ा करने के इच्छुक थे इसके लिये उन्होंने भारत में भी पाश्चात्य राष्ट्रों की भाँति शिक्षा प्रणाली को अपनाने का सुझाव दिया था। जिस प्रकार से अन्य राष्ट्र अपनी भाषा और संस्कृति के माध्यम से शिक्षा में उन्नति करते हैं इसी प्रकार तिलक का भी विचार था कि भारत भी अपनी मातृभाषा को

अपनायें और उसी भाषा से सुदूर का ज्ञान प्राप्त करें। उन्होंने शिक्षा की एक ऐसी भूमिका तैयार की जो भारतीयों को आत्मनिर्भर बनायें, उनकी आर्थिक तंगी दूर करे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. अग्रवाल, गिरिराज शरण, (2012). 'मैं तिलक बोल रहा हूँ', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. ओड, एल. के. (2010). शिक्षा की दार्शनिक पृष्ठभूमि, राजस्थान ग्रन्थ अकादमी जयपुर।
3. तिलक, बी.जी. (1922). हिज राइटिंग्स एण्ड स्पीचेंज तीसरा संस्करण, गणेश एण्ड कम्पनी, मद्रास।
4. तिलक, बी.जी.. (1986). 'गीता रहस्य' नारायण पेठ, पुणे, संस्करण–6।
5. महाजन, विद्याधर, (2004). आधुनिक भारत का इतिहास, एस. चन्द्र एण्ड कम्पनी लिमिटेड रामनगर, नई दिल्ली।
6. रानी, सीमा, (1992). महर्षि कर्वे के शिक्षा दर्शन का आधुनिक संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन लघु शोध प्रबन्ध, महा.ज्यो.फुले रू.वि.वि., बरेली।
7. रामगोपाल, (2002). लोकमान्य तिलक, ग्रन्थ विकास आदर्श नगर, राजापार्क, जयपुर।
8. वेस्ट, जॉन डब्ल्यू. (2008). रिसर्च इन एजुकेशन, प्रेन्टिस हाल ऑफ इंडिया प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
9. शर्मा, चेतन, (2007). बाल गंगाधर तिलक, बाल सहित्य सदन शाहदरा, दिल्ली।